जुमे का ख़ुत्बा

तारीख़ 24 सफ़र 1448 हिजरी, मुताबिक़ 8 अगस्त 2026 ई.

عِبَادَةُ الشُّكْرِ

शुक्र: एक महान इबादत

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَن لَّا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، وَصَفِيُّهُ مِنْ خَلْقِهِ وَخَلِيلُهُ، أَدَّى الأَمَانَةَ، وَبَلَّغَ الرِّسَالَةَ، وَجَاهَدَ فِي اللهِ حَقَّ جِهَادِهِ، حَتَّى أَتَاهُ الْيَقِينُ، صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيماً كَثِيرًا؛ {يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ} [آل عمران: 102].

أَمَّا بَعْدُ: فَإِنَّ أَصْدَقَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللهِ، وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَشَرَّ الْأُمُورِ مُحْدَثَاتُهَا، وَكُلَّ مُحْدَثَةٍ بِدْعَةٌ، وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ، وَكُلَّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ.

ऐ अल्लाह के बंदो! इबादत के सबसे महान और ऊंचे दर्जों में से एक दर्जा 'शुक्र' का है। यह एक बहुत बड़ी इबादत है और अल्लाह के क़रीब होने का बहुत बड़ा माध्यम है। अल्लाह तआला ने शुक्र करने वालों की बहुत तारीफ की है और अपने ख़ास बंदों को इस खूबी से सुसज्जित किया है। अल्लाह तआला ने अपने नबी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बारे में फरमाया:

إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا (الإسراء: 3)

"बेशक, वह एक बहुत शुक्रगुज़ार बंदे थे।" (सूरह अल-इसरा: 3)

और अपने ख़लील हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारे में कहा:

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ (120) شَاكِرًا لِأَنْعُمِهِ اجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ [النحل: 120، 121]

"बेशक, इब्राहीम (अपने आप में) एक पूरी उम्मत थे, अल्लाह के आज्ञाकारी और सिर्फ एक अल्लाह की तरफ ध्यान लगाने वाले थे, और वह मुशरिकों में से नहीं थे। वह उसकी (अल्लाह की) नेमतों के शुक्रगुज़ार थे, अल्लाह ने उन्हें चुन लिया और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत दी।" (सूरह अन्नह्ल:120, 121)

"और जब अल्लाह के नबी हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने अपने ऊपर अल्लाह की लगातार नेमतों की बारिश देखी तो फरमाया:"

قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي أَأَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ كَرِيمٌ [النمل: 40]

"उन्होंने कहा: यह मेरे रब की कृपा है ताकि वह मुझे आज़माए कि क्या मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री, और जो शख्स शुक्र करता है वह अपने ही फायदे के लिए शुक्र करता है, और जो नाशुक्री करता है तो बेशक मेरा रब बेनियाज़ (जिसे किसी की ज़रूरत नहीं) और कृपालु है।" (सूरह अन्नमल: 40)

और हमारे नबी ﷺ अपने रब के बहुत ज़्यादा शुक्रगुज़ार थे। हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इतनी लंबी नमाज़ पढ़ी यहाँ तक कि आपके पाँव मुबारक सूज गए। आपसे पूछा गया: आप इतना कष्ट क्यों उठाते हैं जबकि अल्लाह तआला ने आपकी अगली पिछली सारी ग़लतियाँ माफ़ कर दी हैं? तो आप ﷺ ने फरमाया:

أَفَلَا أَكُونُ عَبْدًا شَكُورًا (رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ)

"क्या मैं शुक्रगुज़ार बंदा न बनूँ?" (सही बुखारी, सही मुस्लिम)

ऐ मुसलमानो! बेशक अल्लाह तआला ने लोगों को शुक्रगुज़ार और नाशुकरे, दो समूहों में बाँटा है। अल्लाह तआला ने फरमाया:

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا [الإنسان: 3]

"बेशक हमने उसे रास्ता दिखा दिया, अब चाहे वह शुक्रगुज़ार बने या नाशुकरा।" (सूरह अल-इन्सान: 3)

और अल्लाह तआला ने अपने शुक्रगुज़ार बंदों के बारे में ख़बर दी है कि वे बहुत थोड़े हैं। चुनाँचे उस महान रब ने फरमाया:

وَقَلِيلٌ مِنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ [سبأ: 13]

"और मेरे बंदों में से शुक्रगुज़ार बहुत कम हैं।" (सूरह सबा: 13)

दुनिया के ज़्यादातर लोग अल्लाह की ज़ाहिरी (प्रत्यक्ष) और बातिनी (अप्रत्यक्ष) नेमतों से मालामाल हैं, मगर इसके बावजूद शुक्र अदा करने वाले कम और अल्लाह की याद में मग्न रहने वाले दुर्लभ हैं। इंसान की लापरवाही का आलम यह है कि जब नेमत छिन जाती है और मुसीबत सिर पर आ पड़ती है, तब ग़फ़लत की नींद से उसकी आँख खुलती है और वह अपनी उदासीनता पर पछताता है, हालाँकि तब यह पछतावा बेकार होता है। इसलिए, असल खुशकिस्मत बंदा वही है जिसे हर पल अपने ऊपर रब की नेमतों की झलक दिखाई दे; उसका दिल अल्लाह के फ़ज़्ल का इक़रार करे, ज़बान उसके ज़िक्र और शुक्र से तर रहे, और उसका वजूद हर पल अल्लाह के हुक्म की पैरवी में झुका रहे। अल्लाह तआला ने फरमाया:

وَآتَاكُمْ مِنْ كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ [إبراهيم: 34]

"और उसने तुम्हें हर वह चीज़ दी जो तुमने उससे माँगी, और अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो उन्हें गिन नहीं सकते, बेशक इंसान बहुत बड़ा ज़ालिम और सख़्त नाशुकरा है।" (सूरह इब्राहीम: 34)

तल्क़ बिन हबीब रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं:

إِنَّ حَقَّ اللهِ أَثْقَلُ مِنْ أَنْ يَقُومَ بِهِ الْعِبَادُ، وَإِنَّ نِعَمَ اللهِ أَكْثَرُ مِنْ أَنْ يُحْصِيَهَا الْعِبَادُ، وَلَكِنْ أَصْبِحُوا تَائِبِينَ، وَأَمْسُوا تَائِبِينَ

"बेशक, अल्लाह का हक़ इतना बड़ा है कि बंदे उसे पूरी तरह अदा नहीं कर सकते, और उसकी नेमतें इतनी ज़्यादा हैं कि उन्हें गिनना इंसान के बस में नहीं है। इसलिए, अपनी सुबह और शाम तौबा और इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) करते हुए गुज़ारो।"

ऐ बरकत वाले लोगो! अल्लाह तआला के खूबसूरत नामों में से एक नाम **'अश-शकूर'** (बहुत क़दरदान) है। यह वह महिमा है जो थोड़े से अमल पर भी बहुत ज़्यादा प्रदान करती है, मामूली नेकी को भी कुबूलियत का सम्मान देती है और उस पर बेहिसाब सवाब देती है। वह एक नेकी का सवाब दस गुना से लेकर सात सौ गुना, बल्कि उससे भी बेपनाह बढ़ाकर प्रदान करता है।

महान रब अक्सर अपने नाम **'अश-शकूर'** के साथ अपने एक और नाम **'अल-ग़फ़ूर'** (बहुत क्षमा करने वाला) का भी ज़िक्र फरमाता है। इसका मतलब यह है कि वह पाक ज़ात हर गुनाह को माफ़ करने वाली है, चाहे वह कितना ही गंभीर क्यों न हो; कोई गुनाह उसकी क्षमा से बड़ा नहीं हो सकता। और दूसरी तरफ वह हर अमल का क़दरदान है, चाहे वह कितना ही मामूली क्यों न हो। पाक है वह रब, जो न तो कभी किसी की आस टूटने देता है और न ही किसी की मेहनत और काम को बेकार जाने देता है।

ऐ मुसलमानो! जिन माध्यमों से बंदा 'शुक्रगुज़ार बंदे' के दर्जे तक पहुँचता है, उनमें से एक ज़रिया दुआ है: अल्लाह के नबी हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फरमाया:

رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَى وَالِدَيَّ [النمل: 19]

"ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी उस नेमत का शुक्र अदा करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर इनाम फरमाई है।" (सूरह अन-नम्ल: 19)

और हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने उनका हाथ पकड़ा और फरमाया:

يَا مُعَاذُ، وَاللهِ إِنِّي لَأُحِبُّكَ، وَاللهِ إِنِّي لَأُحِبُّكَ

"ऐ मुआज़! अल्लाह की क़सम मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ, अल्लाह की क़सम मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ।" फिर फरमाया: "ऐ मुआज़! मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि हर नमाज़ के बाद यह कहना हरगिज़ न छोड़ना:

اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ، وَشُكْرِكَ، وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

"ऐ अल्लाह! अपने ज़िक्र, अपने शुक्र और अपनी बेहतरीन इबादत पर मेरी मदद फरमा।" (इस हदीस को इमाम अबू दाऊद ने रिवायत किया है और अल्लामा अल्बानी ने इसे सही क़रार दिया है)

शुक्रगुज़ारी के माध्यमों में से एक माध्यम अल्लाह की नेमतों का इक़रार करना और उनकी चर्चा करना है: अल्लाह तआला ने फरमाया:

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ [إبراهيم: 7]

"और जब तुम्हारे रब ने ऐलान कर दिया कि अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम्हें और ज़्यादा दूँगा, और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो यक़ीनन मेरा अज़ाब बहुत सख़्त है।" (सूरह इब्राहीम: 7)

चुनाँचे एक शुक्रगुज़ार इंसान जब अल्लाह की नेमतों को देखकर अपने ख़ालिक़ के एहसानों को मानता है, तो इनाम के तौर पर उसे और ज़्यादा फ़ज़्ल और रहमतों से मालामाल कर दिया जाता है। इसीलिए उलमा शुक्र को 'अल-हाफ़िज़' (हिफ़ाज़त करने वाला) कहते थे, क्योंकि यह मौजूद नेमतों की हिफ़ाज़त करता है और खोई हुई नेमतों को खींच लाता है।

शुक्रगुज़ारी के माध्यमों में से एक माध्यम नेमत को अल्लाह की रज़ा वाले कामों में इस्तेमाल करना है: क्योंकि शुक्र की हक़ीक़त यह है कि नेमत को उन कामों में इस्तेमाल किया जाए जिनसे अल्लाह तआला राज़ी होता है। किसी अल्लाह वाले ने कहा:

الشُّكْرُ تَرْكُ الْمَعْصِيَةِ

"शुक्र, गुनाहों को छोड़ देने का नाम है।"

शुक्रगुज़ारी के माध्यमों में से एक माध्यम यह भी है कि दुनियावी मामलों में अपने से कमतर (नीचे) वालों की तरफ देखा जाए: हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फरमाया:

انْظُرُوا إِلَى مَنْ هُوَ أَسْفَلَ مِنْكُمْ، وَلَا تَنْظُرُوا إِلَى مَنْ هُوَ فَوْقَكُمْ، فَإِنَّهُ أَجْدَرُ أَنْ لَا تَزْدَرُوا نِعْمَةَ اللهِ عَلَيْكُمْ [متفق عليه]

"(दुनिया के मामले में) हमेशा उन लोगों पर नज़र रखो जो तुमसे कमतर (नीचे) हैं, और उनकी तरफ न देखो जो तुमसे बढ़कर (ऊपर) हैं। यह ज़्यादा उचित है कि तुम अपने रब की दी हुई नेमतों को मामूली या हक़ीर न समझो।" (सही बुखारी, सही मुस्लिम)

بَارَكَ اللهُ لِي وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيمِ، وَنَفَعَنِي وَإِيَّاكُمْ بِمَا فِيهِ مِنَ الآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ، أَقُولُ قَوْلِي هَذَا وَأَسْتَغْفِرُ اللهَ لِي وَلَكُمْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ، فَاسْتَغْفِرُوهُ وَتُوبُوا إِلَيْهِ؛ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ.

दूसरा ख़ुत्बा

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى إِحْسَانِهِ، وَالشُّكْرُ لَهُ عَلَى تَوْفِيقِهِ وَامْتِنَانِهِ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى الدَّاعِي إِلَى رِضْوَانِهِ، مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَمَنْ سَارَ عَلَى مِنْوَالِهِ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ.

ऐ मुसलमानो! अल्लाह तआला ने हम पर जो बहुत सारे महान उपकार किए हैं, उनमें से एक बहुत बड़ी नेमत 'पानी' है। यह पानी बिना किसी मेहनत और कष्ट के आसानी से हम तक पहुँच जाता है, जबकि दुनिया में ऐसे लोग भी मौजूद हैं जो पानी हासिल करने के लिए मीलों लंबा सफ़र तय करते हैं, चाहे वह पानी पीने के लायक़ हो या न हो। अल्लाह तआला अपने बंदों पर इस महान नेमत का एहसान जताते हुए कहता है:

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَعِينٍ [الملك: 30]

"आप कह दीजिए: भला यह तो बताओ, अगर तुम्हारा पानी ज़मीन में गहराई में उतर जाए, तो फिर कौन है जो तुम्हारे पास बहता हुआ साफ़ पानी ले आएगा?" (सूरह अल-मुल्क: 30)

पानी की इस नेमत का मुकम्मल शुक्र यह है कि बंदा इसका सही इस्तेमाल करे और पानी में फ़िज़ूलख़र्ची से बचे। जब हमारे दीन ने हमें दान और वुज़ू में फ़िज़ूलख़र्ची से मना किया है, हालाँकि यह दोनों इबादत हैं, तो फिर इनके अलावा दूसरे कामों में फ़िज़ूलख़र्ची का क्या हाल होगा? ज़रा ग़ौर करें, अल्लाह तआला फरमाता है:

وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا [الفرقان: 67]

"और वे जब ख़र्च करने लगते हैं तो न फ़िज़ूलख़र्ची करते हैं और न कंजूसी से काम लेते हैं, बल्कि उनका ख़र्च इन दोनों के बीच संतुलन पर क़ायम रहता है।" (सूरह अल-फ़ुरक़ान: 67)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने तीन-तीन बार (अंगों को धोकर) वुज़ू किया, फिर फरमाया:

هَكَذَا الْوُضُوءُ، فَمَنْ زَادَ عَلَى هَذَا فَقَدْ أَسَاءَ، وَتَعَدَّى، وَظَلَمَ

"वुज़ू इसी तरह है, जिसने इस में बढ़ाया, यक़ीनन उसने बुरा किया, हद से पार किया, और ज़ुल्म किया।" (इस हदीस को इमाम अहमद और नसाई ने रिवायत किया है, और अल्लामा अल्बानी ने इसे सही क़रार दिया है)

ऐ ईमान वालो! वर्तमान समय में अल्लाह तआला ने हम पर जो महान उपकार किए हैं, उनमें बिजली की नेमत भी शामिल है। इसी से हमारे घरों में उजाला है, खाने-पीने की चीज़ें सुरक्षित रहती हैं, ज़िंदगी का सिस्टम चलता है, संचार के साधन काम करते हैं और भयंकर गर्मी से बचाव मुमकिन होता है। ज़रा सोचिए! अगर दिन या रात के किसी भी समय सिर्फ एक घंटे के लिए बिजली चली जाए, तो यूँ लगता है जैसे ज़िंदगी रुक गई हो और तमाम काम-काज ठप हो गए हों। हक़ीक़त यह है कि जब इंसान किसी नेमत का लगातार आदी हो जाता है तो उसे उसकी क़दर नहीं रहती, लेकिन जब वह नेमत छिन जाए तब उसकी अहमियत समझ में आती है। इसलिए, बिजली का बेदर्दी और लापरवाही से इस्तेमाल करना, और दिन-रात उसे बिना ज़रूरत खुला रखना, एक बेहद निंदनीय फ़िज़ूलख़र्ची है। हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इरशाद फरमाया:

إِنَّ اللهَ كَرِهَ لَكُمْ ثَلَاثًا: قِيلَ وَقَالَ، وَإِضَاعَةَ الْمَالِ، وَكَثْرَةَ السُّؤَالِ

"बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे लिए तीन चीज़ों को नापसंद फरमाता है: फ़िज़ूल बातें, माल बर्बाद करना, और ज़्यादा से ज़्यादा अनावश्यक सवाल करना।" (इस हदीस को इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है)

ऐ अल्लाह! हमारे दिलों में ईमान की मुहब्बत पैदा फरमा और इसे हमारे दिल और रूह की ज़ीनत बना दे। कुफ़्र, नाफ़रमानी और गुनाहों से हमें दूर कर दे और हमें सीधे रास्ते पर चलने वालों में शामिल फरमा। ऐ अल्लाह! इस्लाम और मुसलमानों को बुलंदी और इज़्ज़त प्रदान कर, और शिर्क और मुशरिकों को ज़लील और रुसवा कर। ऐ अल्लाह! कुवैत और इसके निवासियों को हर बुराई और मुसीबत से महफ़ूज़ रख, और इस देश के साथ-साथ सारे इस्लामी देशों को अमन और सलामती का केंद्र बना दे। ऐ हमारे रब

अमन व अमान की हिफ़ाज़त पर तैनात हमारे रक्षक भाइयों की निगहबानी फरमा और उन्हें दृढ़ता प्रदान कर। ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और उनके वली अहद (उत्तराधिकारी) को उन नेक कामों की तौफ़ीक़ दे जिनसे तू राज़ी होता है, और नेकी और तक़वा और परहेज़गारी के रास्ते पर उनकी बेहतरीन रहनुमाई फरमा।

وَآخِرُ دَعْوَانَا أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

खुत्बात-ए-जुमा तैयार करने वाली कमेटी